कीटनाशक का प्रयोग एवं सावधानियॉ

किसान कॉल सेन्टर
टॉल फ्री नं0–18001801551

कीटनाशक का सही प्रयोग
जीवन, स्वास्थ्य की रक्षा करना

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण
आत्मा, चतरा (झारखण्ड)
Website-www.atmachatra.org
Email- atmactr@rediffmail.com
atmactr@gmail.com

कीटनाशक का प्रयोग और सावधानियॉ

कीटनाशक का प्रयोग चतरा जिला में किसान अभी भी पुआल का कुच्चा बनाकर करते हैं। इस कुच्चा विधि से कीटनाशक के छिड़काव में किसान को सिर्फ हानि उठानी पड़ती है। इससे दवा का एक समान वितरण नहीं होता है। कीटनाशक की बर्बादी ज्यादा होती है साथ ही किसानों का पैसा बर्बाद होता है। सब्जी की फसल में यहॉ के किसान दवा का प्रयोग करते भी हैं लेकिन धान, गेहूँ, मक्का, अरहर इत्यादि के फसलों में कीटनाशक का प्रयोग काफी कम करते हैं। जिसका हानिकारक प्रभाव किसानों को उठाना पड़ता है। इधर दो वर्षों से आत्मा चतरा के द्वारा प्रचार अभियान के फलस्वरूप कुछ किसानों के पास छिड़काव यंत्र उपलब्ध हो पाया है। कुछ किसानों को जागरूकता आयी है परन्तु अभी भी काफी कमी है।

बाजार में उपलब्ध कीटनाशकों को मुख्यतः चार भागों में बॉटा गया है जिसे किसान अच्छी तरह समझ कर प्रयोग कर सकते हैं। कीटनाशक के बोतल के उपर त्रिकोण संरचना को विभिन्न रंगों से रंगा होता है। इसके आधार पर किसान कीटनाशक का चुनाव कर सकते हैं–

क) लाल रंग वाले कीटनाशक – यह काफी प्रभावी होता है। इसका प्रयोग किसान को करने के बाद फसल की तोड़ाई 25 से 30 दिन बाद ही करना चाहिये नहीं तो इसका हानिकारक तत्व फल में जमा रहता है जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। इसका प्रयोग फल–फूल अवस्था में नहीं करना चाहिये। यदि करना पड़े तो एक फल–फूल को तोड़कर जमीन में दबा देना चाहिये तथा दूसरे फल–फूल को खाने में उपयोग लाना चाहिये।

ख) पीला रंग वाले कीटनाशक – इसका प्रयोग किसान को करने के बाद 15–20 दिनों के बाद फल की तुड़ाई कर बाजार में भेजना चाहिये नहीं तो इसका हानिकारक तत्व फल में जमा रहता है। जिसका हानिकारक प्रभाव जीव स्वास्थ्य पर पड़ता है।

ग) ब्लू रंग वाले कीटनाशक – इसका प्रयोग किसान को करने के बाद 7 से 8 दिनों बाद फल की तुड़ाई कर बाजार में भेजना चाहिये नहीं तो इसका हानिकारक तत्व फल में जमा रहता है जिसका हानिकारक प्रभाव जीव स्वास्थ्य पर पड़ता है।

घ) हरा रंग वाले कीटनाशक – इसका प्रयोग किसान को करने के बाद एक से दो दिन बाद फल को तोड़कर स्वच्छ पानी से धोकर उपयोग करना चाहिये। इसका हानिकारक प्रभाव जीव स्वास्थ्य पर नहीं पड़ता है।

लगातार एक फसल में एक ही कीटनाशक का प्रयोग नहीं करना चाहिये। प्रत्येक दो स्प्रे के बाद रसायन (कीटनाशक) को बदल देना चाहिए। रोग और कीड़ा लगने से पहले यदि किसान कीटनाशक का प्रयोग योजनाबद्ध बनाकर करते हैं तो उन्हें कम पैसे में रोग व कीड़ों का आसानी से नियंत्रण किया जा सकता है और उत्पादन लागत को कम किया जा सकता है।

कीटनाशकों का उपयोग करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं पर सावधानियॉ बरतनी चाहिये–

क) <u>कीटनाशक खरीदते समय बरती जाने वाली सावधानियॉ</u> –

1) एक बार प्रयोग के लिये जितनी मात्रा की आवश्यता है उतनी ही मात्रा में कीटनाशक को बाजार से खरीदें।
2) रिसते हुए डिब्बों, खुला ढक्कन, फटे बैग, बिना मोहर लगा कीटनाशक को न खरीदें।
3) बिना अनुमोदित लेबल वाले कीटनाशक को न खरीदें।
4) एक्सपायरी डेट की दवा न खरीदें।
5) अच्छी कम्पनी की कीटनाशक का चुनाव करें।
6) दुकानदार से बिल अवश्य लें।

ख) <u>भण्डारण के समय बरती जाने वाली सावधानियॉ</u> –

1) घर के अन्दर कीटनाशक का भण्डारण न करें।
2) कीटनाशक को किसी दूसरे बर्तन में अदला–बदली न करें।
3) खाद्य सामाग्री और चारा के साथ कीटनाशक को न रखें।
4) बच्चों या पशुओं के पहुॅच के बाहर रखें।
5) वर्षा या धूप में कीटनाशक को न खोलें।
6) खर–पतवार को दूसरे कीटनाशक के साथ न रखें।

ग) <u>बाजार से घर लाते समय बरती जाने वाली सावधानियॉ</u> –

1) खाद्य पदार्थों के साथ कीटनाशक को न लावें।
2) अधिक कीटनाशक की मात्रा को सर, कंधें व पीठ पर रख कर न लावें।

घ) <u>घोल बनाते समय बरती जाने वाली सावधानियॉ</u> –

1) घोल बनाते समय नाक, ऑख, मुॅह, कान तथा हाथ का बचाव करें।
2) केवल स्वच्छ पानी का इस्तेमाल करें।
3) घोल बनाते समय हाथ का दस्ताना, चेहरे का मास्क (नकाब) तथा सर को ढकते हुए टोपी का प्रयोग करें।
4) डिब्बे पर दिये निर्देश को अच्छी तरह पढ़कर प्रयोग करें।
5) दानेदार कीटनाशक को जल के साथ मिश्रण न बनायें।
6) मोहरबंद पात्र के सान्द्र कीटनाशक को हाथ के सम्पर्क में न आने दें।
7) छिड़काव मशीन के टैंक को न सूॅघें।
8) छिड़काव मशीन के टैंक में कीटनाशक ढालते समय बाहर न गिरने दें।
9) छिड़काव मिश्रण तैयार करते समय खाना, पीना, चबाना या धूम्रपान न करें।
10) पाउडर वाले दवा को पहले छोटे बर्तन में घोल बनाकर छिड़काव यंत्र के टैंक में मिलायें।
11) नाखुन कटे होने चाहिये।
12) केवल सिफारिश की गयी मात्रा व सांद्रता के घोल का ही प्रयोग करें।

ड.) <u>छिड़काव करते समय बरती जाने वाली सावधानियॉ</u> –

1) कीटनाशक का छिड़काव गर्म दिन की अवधि एवं तेज वायु गति के समय न करें।
2) वर्षापरांत या वर्षा के पूर्व कीटनाशक का प्रयोग न करें।
3) हवा की दिशा के विरूद्ध कीटनाशक का छिड़काव न करें।
4) सही नोजल का इस्तेमाल करें।
5) पूरे शरीर को अच्छी तरह ढक कर रखें।
6) रिसनेवाले या दोषपूर्ण उपकरण का प्रयोग न करें।
7) रूकावट पैदा करने वाले नोजल को मुॅह से न फूॅकें।
8) खर–पतवार नाशक तथा कीटनाशक हेतु एक ही छिड़काव मशीन का उपयोग न करें।

च) <u>कीटनाशक छिड़काव के बाद बरती जाने वाली सावधानियॉ</u> –

1) छिड़काव के बाद स्प्रयेर, बाल्टी आदि को साबुन पानी से अच्छी तरह साफ कर धूप में सूखने दें।
2) छिड़काव के तुरंत बाद उपचारित क्षेत्र में जानवर और मजदूर को प्रवेश न करने दें। इसके लिये लाल कपड़े का झण्डा खेत में लगायें।
3) छिड़काव के बाद बचे हुए घोल को तालाब, जलाशय, पानी के पाईप के सम्पर्क में न फेंके।
4) उपयोग किये गये बर्तन, डब्बे को पत्थर से पिचकाकर जलस्रोत से दूर मिट्टी में काफी गहराई में दबा दें।
5) खाली डब्बे का प्रयोग खाद्य पदार्थ रखने में प्रयोग न करें।
6) शरीर को अच्छी तरह साबुन से धोकर स्नान करें।
7) चूहे को दिये गये कीटनाशक पदार्थ को प्रातः काल जमा कर जमीन के नीचे गाड़ दें। इसे इधर–उधर न फेंके।

संरक्षक
श्री मनोज कुमार
उपायुक्त सह अध्यक्ष, आत्मा चतरा
प्रायोजक
श्री धीरेन्द्र कुमार पाण्डेय
परियेाजना निदेशक, आत्मा चतरा
श्री राजेश कुमार सिंह
उप उपयोजना निदेशक, आत्मा चतरा
सामाग्री– श्री सुधीर कुमार (प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक, आत्मा)
टंकण – अमित कुमार सिन्हा (कम्प्युटर सहायक, आत्मा)
वेबसाईट– www.atmachatra.org
ईमेल– atmactr@rediffmail.com
atmactr@gmail.com